घर घर होसी सादियां, उड़ गई गफलत।
जो कह्या सो सब हुआ, आई ए आखिरत।। ४२ ।।

घर-घर में अब बड़ी खुशियां मनाई जाएंगी। सबकी अज्ञानता मिट गई। जो मुहम्मद साहब ने आखिरत के लिए पहले कहा था, वह सब पूरा हुआ।

तारीफ महंमद मेहेंदी की, ऐसी सुनी न कोई क्यांहें।
कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्मांडो नांहें।। ४३ ।।

आज दिन तक कई ब्रह्माण्ड हो गए, पर किसी ब्रह्माण्ड में इमाम मेंहदी की शोभा (प्रशंसा) हुई है, ऐसी कहीं भी किसी ब्रह्माण्ड में नहीं सुना।

॥ प्रकरण ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ १०५२ ॥

सनन्ध–दज्जाल की

जिन मोमिन के कारने, रचिया एह मंडल।
तिनकी उमेदां पूरने, मेहेदी महंमद आए मिल।। १ ।।

जिन मोमिनों के लिए यह ब्रह्माण्ड बनाया गया है, उनकी चाहना पूरी करने के लिए ही मेंहदी मुहम्मद यहां आए हैं।

अब नेक कहूं आखिर की, जो होसी सब जाहेर।
बांधे दज्जालें मोमिन, अंतर मांहें बाहेर।। २ ।।

अब थोड़ी-सी बात आखिरत के समय की बताती हूं जो सब में जाहिर होगी। दज्जाल ने मोमिनों को अन्दर (अबलीस), बाहर और अंतर (अजाजील) से बांध रखा है।

आया इमाम आलम का, तब कुफर रेहेवे कित।
पर कहूं मोमिन दज्जाल की, नेक हुई लड़ाई इत।। ३ ।।

सारे संसार के मालिक आएं हैं, तब इनके सामने कुफ्र कैसे रह सकता है? मोमिनों और दज्जाल की जो लड़ाई हुई है उसकी थोड़ी-सी हकीकत बताती हूं।

क्यों कहूं बल दज्जाल का, जाहेर बड़ा पलीत।
जोर न चले काहू का, लिए जो सारे जीत।। ४ ।।

दज्जाल की ताकत का कहां तक वर्णन करूं? यह बड़ा नीच है। इसने सारे जगत को जीत रखा है, किसी का कोई बल नहीं चलता।

अंग जो बांधे या बिध, पेहेले पेड़ से फिराई बुध।
उलटाए सबों या बिध, परी न काहूं सुध।। ५ ।।

इसने अंग-अंग में तरह-तरह के बन्धन बांध रखे हैं। शुरू से ही (जड़ से ही) बुद्धि को बांध रखा है। इसने सभी को उलटा कर उलटे रास्ते लगा दिया है। इसकी सुध किसी को नहीं है।

दज्जाल नजरों न आवहीं, सब में किया दखल।
जाने दोस्त को दुस्मन, कोई ऐसी फिराई कल।। ६ ।।

दज्जाल नजर से दिखाई नहीं देता पर सबके अन्दर यह बैठा है। जिससे दोस्त दुश्मन की तरह दिखाई पड़ते हैं। बुद्धि को इसने ऐसा उलटा रखा है।

Nijanand App

अंदर जो बांधे या बिध, कही न जाए करामत।
सत असत कर देखहीं, असत लग्या होए सत।।७।।

इसने अन्दर जो बन्धन बांधे हैं उस करामात का कहना अति कठिन है। इससे सत झूठा और झूठा सत लगने लगा है।

मन चित बुध अहंकार, काम क्रोध गफलत।
आउध ए दज्जाल के, स्यानप ग्यान असत।।८।।

मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार, काम, क्रोध, भ्रम, चतुराई तथा झूठा ज्ञान, आदि सभी दज्जाल के हथियार हैं।

भी आउध अमृत रूप रस, छल बल वल अकल।
कोमल कुटिल अंग सीतल, चंचल चतुर चपल।।९।।

अमृत, रूप, रस, छल, बल, दांव-पेंच, अक्ल, कोमलता, कुटिलता, शीतलता, चंचलता और चतुराई तथा चपलता, आदि भी इसके हथियार हैं।

जाकी अग्याएं अगनी चले, चले जिमी और जल।
वाउ भी हुकम पर खड़ा, ऐसा दज्जाल का बल।।१०।।

इसकी आज्ञा से अग्नि जलती है। जमीन और जल चलते हैं। हवा भी इसके हुकम पर खड़ी है। इतनी बड़ी दज्जाल की शक्ति है।

ए दज्जाल बड़ा जोरावर, मूल गफलत याके साथ।
मनसा वाचा करमना, ए सब इनके हाथ।।११।।

यह दज्जाल (शैतान-अबलीस) बड़ी ताकत वाला है। शुरू से ही मन, वचन और कर्म से संशय इसके साथ हैं।

जुध बड़ा दज्जाल का, लिए जो सारे जीत।
भागे भी ना छूटहीं, कोई ऐसा बड़ा पलीत।।१२।।

दज्जाल कीं लड़ाई के सामने कोई भागकर भी नहीं छूट सकता। यह ऐसा नीच है। इसने सबको जीत रखा है।

सूर बड़े इन जहान में, जिन किए सामें बल।
ताबे अपने कर लिए, बाए गले सांकल।।१३।।

इस संसार में बड़े-बड़े लोगों (योगी, तपस्वी, ज्ञानी, ध्यानी, इत्यादि) ने लड़ाई लड़ी, किन्तु माया ने उनके गले में फंदे डालकर उन्हें अपने वश में कर लिया।

छीन लिए बल सबन के, जो सूरमें बड़े केहेलाए।
बांध्या जो कोई बल करे, तो बड़े जो गोते खाए।।१४।।

इस तरह से इन बड़े-बड़े शूरवीरों की ताकत को छीन लिया। इसके वश में आकर भी जिसने बल दिखाया, उसे माया के और अधिक कष्ट उठाने पड़े।

जो बुजरक बड़े कहावहीं, तिन जुध किए मिल मिल।
सो फरिस्ते उलटाए के, ले डारे गफलत दिल।।१५।।

बड़े-बड़े बुजुर्गों (ज्ञानियों) ने मिलकर दज्जाल से लड़ाई मोल ली, फिर भी इस दज्जाल ने सबको उलटकर माया के लालच में डाल दिया।

Nijanand App

ए जुध करे सबनसों, आप नजर न आवे किन।
दज्जाल जोर करामात, सब किए आप से तन।। १६ ।।

यह सबसे युद्ध करता है, परन्तु किसी को दिखाई नहीं देता, क्योंकि इसने सबको अपने जैसे तन दे रखे हैं, अर्थात् यह मन का रूप है जो सबके अन्दर है।

कोई न छोड़्या दज्जालें, जीत लिए सकल।
ऐसे अंधे कर लिए, कोई सके न काहूं चल।। १७ ।।

इस दज्जाल ने सभी को जीत लिया है। किसी को नहीं छोड़ा। माया के मोह में ऐसा अन्धा बना दिया है कि कोई चल भी नहीं सकता, अर्थात् कोई माया छोड़ नहीं सकता।

सब अंग बांधी दुनियां, सारे हुए बेअकल।
अबलों किन देख्या नहीं, कुफर करामात कल।। १८ ।।

सारी दुनियां इस प्रकार माया के बन्धनों में बंधकर नासमझ हो गई है। अभी तक इस शैतान के झूठे कारनामे को कोई नहीं देख सका।

या बिध बांधी दुनियां, खोल ना सके कोई बंध।
राह हक की छुड़ाए के, ले डारे गफलत फंद।। १९ ।।

इसने दुनियां के जीवों पर बड़े जबर्दस्त बन्धन डाले हैं जिसे कोई खोल नहीं पाया। जीवों ने अज्ञान के अन्धकार में डूबकर पारब्रह्म का रास्ता ही छोड़ दिया।

दुनियां बाहेर देखहीं, अजूं आया नहीं दज्जाल।
बंदगी करते आवसी, तब लड़सी तिन नाल।। २० ।।

दुनियां के लोग समझते हैं कि बन्दगी के समय जाहिरी में दज्जाल आएगा और वह उस समय दज्जाल से लड़ेंगे, परन्तु दज्जाल अभी तक रूप धारण करके आया नहीं।

खाए गया सबन को, अजूं देखत नाहीं ताए।
तिनसे लड़ने बाहेर, बांध बांध कमरें जाए।। २१ ।।

उस दज्जाल ने सबको खा लिया (अपने अधीन कर लिया)। दुनियां अभी भी उसको समझ नहीं पा रही है। बन्दगी के समय दज्जाल से लड़ने के लिए जाहिरी तलवारें बांधकर जाते हैं।

जुध याको जाहेर कह्या, देसी बंदगी छुड़ाए।
आप अंदर से उठसी, जीत्यो न काहू जाए।। २२ ।।

दज्जाल के युद्ध का जाहिरी अर्थ है कि वह बन्दगी नहीं करने देगा। वह अन्दर से ही मन में उलझनें पैदा कर देगा और बन्दगी छुड़ा देगा, इसलिए उसे कोई जीत नहीं सकता।

जाहेर कहे जो माएने, ए तित भी रहे उरझाए।
लिखियां जो इसारतें, सो इनों क्यों समझाए।। २३ ।।

जो जाहिरी रूप से कुरान में लड़ाई के किस्से लिखे हैं उनको भी यह नहीं समझ पाए, तो कुरान के बातूनी अर्थ जो इशारतों में लिखे हैं, उसे कैसे समझेंगे?

Nijanand App

तो कह्या नबिऐं इमन को, ला बारकला मुसल्मीन।
दई बारकला हिंद मुस्लिम, लिए सिर कलाम आकीन।। २४ ।।

रसूल साहब टीले पर खड़े होकर खुदा से हिन्द के मुसलमानों के लिए रहमत मांगते हैं। इमन (अरब, ईराक, इरान और फारस) के मुसलमानों से बरकत उठाकर हिन्द के मुसलमानों को दे दी, क्योंकि हिन्द के मुसलमानों ने ही दीन को अच्छी तरह से समझा।

कहा कहूं बल दज्जाल को, जोर बड़ा जालिम।
पेहेले पढ़े सब लिए, पीछे छोड़्या न कोई आलम।। २५ ।।

दज्जाल की ताकत बड़ी है और वह जालिम भी है। इसने पहले पढ़े-लिखे विद्वान अगुओं के दिल में अहंकार पैदा करके अपने वश में किया और फिर पीछे संसार में किसी को नहीं छोड़ा।

नाम इमाम धरावहीं, पर फुरमान की ना सुध।
बरकत कलमें रसूल के, साफ होसी सब बिध।। २६ ।।

नाम तो अपना इमाम धराकर आगे चलते हैं, परन्तु उनको कुरान की सुध नहीं होती। अब स्वामी श्री प्राणनाथजी की वाणी के ज्ञान से सबके संशय समाप्त हो जाएंगे।

नजरों काहू न आवहीं, करत गैब की मार।
कोई छूट्या मोमिन भाग के, और कर लिए सब कुफार।। २७ ।।

यह शैतान मन, किसी को नजर नहीं आता और अन्दर ही अन्दर मार करता है। इससे कोई-कोई मोमिन ही बचकर निकले। बाकी सबको इसने अपने अधीन कर रखा है।

फरिस्ता चौदे तबकों, फिरवल्या सब पर।
हुकम चलाया अपना, कोई रह्या न ताबे बिगर।। २८ ।।

इस अजाजील फरिश्ते ने (दज्जाल ने) चौदह लोकों के ऊपर अपनी सत्ता जमा ली है और अपने ही अधीन सबको करके अपना हुकम चलाता है।

ओ जाने हम सीधा चलें, इन बिध राह मारत।
तो कही पुल-सरात, तरवार धार है इत।। २९ ।।

दुनियां वाले समझते हैं हम कर्मकाण्ड करके (शरीयत पर चलकर) खुदा के रास्ते पर सीधा चल रहे हैं। पर वह सबको राह से गुमराह कर रहा है। इसलिए शरीयत (कर्म-काण्ड) को तलवार की धार के समान कहा है (कर्मकाण्ड से कोई पार नहीं हुआ)।

ए आदम औलाद सब जानत, इन बदला मांग लिया हक पें।
क्यों छूटे बंध दुस्मन के, तो किन चल्या ना इनसें।। ३० ।।

यह आदम की सब औलाद आदमी हैं। वह यह जानते हैं कि अजाजील से हमारी दुश्मनी है। इसने खुदा से हमारे अन्दर बैठकर गुनाह करवाने की शक्ति मांग रखी है, इसलिए कोई भी आदमी इस अजाजील के बन्धन से छूट नहीं पाता और किसी की इसके सामने ताकत नहीं चलती है।

क्यों करें जंग दज्जाल से, काफर या मुसलमान।
औलाद आदम सब ताबीन, पातसाह दिलों सैतान।। ३१ ।।

किसी भी काफिर और मुसलमान के पास दज्जाल से लड़ने की ताकत नहीं है, क्योंकि आदम की औलाद के दिलों पर इसकी बादशाही (अधिकार) है।

Nijanand App

तो क्या चले बंदन का, जिन दिल पर ए पातसाह।
सब जानें दुस्मन मारसी, हक तरफ चलते राह।। ३२ ।।

जिनके दिलों पर इसकी बादशाही है वह भक्त जन भी क्या करें? यह सभी जानते हैं कि धर्म की राह पर चलने में यह दुश्मन हमको मारेगा।

दिल मोमिन हक अर्स कह्या, तो इन दुनियां करी हराम।
पीठ दई मुरदार को, जिन दिलों अर्स आराम।। ३३ ।।

मोमिनों के दिलों में हक की बैठक है। यही इस दुनियां को हराम समझकर छोड़ सके। इन्होंने सारी दुनियां को पीठ दे दी, जिनके दिल में श्री राजजी की बैठक है।

जो दिल कह्या अर्स हक का, तिन तरफ जले काफर।
मार न सके राह मोमिनों, सब बंधे इनों बिगर।। ३४ ।।

जिनके दिलों में हक की बैठक है, उनके रास्ते पर काफिर लोग नहीं चल सकते। शैतान मोमिनों के रास्ते पर रोक नहीं लगा सकता। बाकी सबको अपने बन्धन में इसने बांध रखा है।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, तो कह्या अर्स कलूब।
तिन तरफ क्यों आए सके, जिनका हक मेहेबूब।। ३५ ।।

मोमिन परमधाम से उतरे हैं, इसलिए इनके दिल को हक का अर्श कहा है, इसलिए उन मोमिनों की तरफ यह दज्जाल आ ही नहीं सकता, क्योंकि यह पारब्रह्म के प्यारे हैं (इनका पति पारब्रह्म है)।

सब साफ किए दिल मोमिन, जब इत आए इमाम।
जिन दिल पातसाह सैतान, किए पाक जलाए तमाम।। ३६ ।।

जब यहां श्री प्राणनाथजी आए तो उन्होंने मोमिनों के दिलों के संशय मिटा दिए और जिनके दिलों पर शैतान की बादशाही है उन्हें पश्चाताप की अग्नि में जलाकर पाक (पवित्र) किया।

खबर न पाई काहूं ने, जो दिल ऊपर सैतान।
साफ किए सबन को, जाहेर कर हुकम सुभान।। ३७ ।।

आज दिन तक कोई नहीं जान पाया था कि शैतान दिल के अन्दर ही बैठा है। श्री राजजी महाराज के हुकम ने इसे जाहिर कर सबके दिल साफ कर दिए।

जाहेर काहूं न हुआ, छिप कर लिए सब।
इमाम आए जाहेर हुआ, ए जो दज्जाल न देख्या किन कब।। ३८ ।।

पहले यह किसी को पता नहीं था कि शैतान अन्दर बैठा है। यह समझते थे कि बन्दगी के समय वह छिपकर आएगा। इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) जाहिर हुए तो उन्होंने दज्जाल के भेद को बताया कि यह सबके अन्दर बैठा है और किसी ने इसको देखा नहीं है।

जब इमाम इत आए, तब क्यों रहे ढांप्या चोर।
मोमिन पेहेले छुड़ाए के, दिए दुनी के बंध तोर।। ३९ ।।

जब श्री प्राणनाथजी (इमाम मेंहदी) यहां पर आए तब चोर छिपकर कैसे रह सकता है? उन्होंने पहले मोमिनों को बन्ध से छुड़ाया। पीछे दुनियां को दज्जाल के बन्धन से मुक्त किया।

Nijanand App

ए जो जीती दज्जालें दुनियां, कर लई थी निरबल।
सो बल सबको देय के, दिए सुख नेहेचल।। ४० ।।

दज्जाल ने सब दुनियां को जीतकर उसे कमजोर बना दिया था, अर्थात् किसी को ईमान पर खड़े नहीं रहने देता था। प्राणनाथजी ने सबको तारतम वाणी की ताकत दी और बहिश्तों के अखण्ड सुख दिए।

लिख्या है फुरमान में, मेंहेदी आवेगा आखिर।
उड़ाए मारसी दज्जाल को, राह देसी सीधी कर।। ४१ ।।

कुरान में लिखा है कि आखिरत में इमाम मेंहदी आएंगे। वह दज्जाल को मारकर दुनियां को सीधा रास्ता बताएंगे, अर्थात् कर्मकाण्ड का रास्ता समाप्त कर प्रेम-मार्ग पर चलाएंगे।

अब हुए सब जाहेर, कुफर करामात कल।
महंमद मेंहेदी के प्रताप से, जासी बंध सब जल।। ४२ ।।

अब दज्जाल के झूठे कारनामे जाहिर हो गए हैं और अब वह मुहम्मद मेंहदी के प्रताप से जलकर समाप्त हो जाएगा।

कुदरत रूप दज्जाल को, किनहूं न जान्या जाए।
तब सबों को सुध परी, जब ईसे दिया उड़ाए।। ४३ ।।

यह माया ही दज्जाल का रूप है, यह किसी ने नहीं जाना। इसकी पहचान सभी को तब मिली जब ईसा श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने इसको समाप्त कर दिया।

इमाम तो मारे इनको, जो ए आपे होए वजूद।
इमाम के आवाज से, होए गया नाबूद।। ४४ ।।

दज्जाल का कोई रूप होता तो प्राणनाथजी उसको मारते। प्राणनाथजी की वाणी से ही यह मिट गया।

जब इमाम जाहेर हुए, तब क्यों रेहेवे अंधेर।
अपनी तरफ सबन के, लिए दुनी दिल फेर।। ४५ ।।

जब इमाम साहब (श्री प्राणनाथजी महाराज) प्रगट हो गए तो अज्ञान का अन्धेरा कैसे रह सकता है? इन्होंने अपनी जागृत बुद्धि से दुनियां के दिलों को अपनी तरफ मोड़ लिया।

जो कबहूं प्रगटे होते, तो होत कुफर को नास।
जब इमाम जाहेर हुए, तब नूर हुआ उजास।। ४६ ।।

इससे पहले यदि इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) जाहिर हुए होते तो तभी यह कुफ्र मिट जाता। अब जब इमाम मेंहदी जाहिर हो गए हैं तो इनकी वाणी से उजाला हुआ।

मेंहेदी महंमद ढांपे ना रहें, जासों झूठ भी सांच होए।
ऐसा खसम जोरावर, यासें सुख पावे सब कोए।। ४७ ।।

मुहम्मद मेंहदी किसी के ढांपने से छिप नहीं सकते, क्योंकि इनकी कृपा से नाशवान जगत भी अखण्ड होना है। ऐसी शक्ति के मालिक श्री प्राणनाथजी आ गए हैं, इसलिए सबको सुख मिलेगा।

॥ प्रकरण ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ १०९९ ॥

Nijanand App